समकालीन विमर्श

(सोविनियर)

Metric
Hi
Dr.M

संपादक

प्रा.डॉ.मंजूर सैय्यद

हिंदी विभागाध्यक्ष,
म.वि.प्र.संचालित कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

डॉ.ए.पी.पाटील

प्राचार्य,
म.वि.प्र.संचालित कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

SOUVENIR

ISBN 978-81-923650-7-7

समकालीन विमर्श

संपादक

प्रा.डॉ.मंजूर सैय्यद

हिंदी विभागाध्यक्ष, म.वि.प्र.संचालित
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. ए. पी. पाटील

मराठा विद्या प्रसारक समाज, नाशिक संचालित
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र) पिन ४२२२०६
Phone : Office: 91-(02550) 206019,
e-mail : ozarcollege@gmail.com, Website : www.ozarcollege.com

ब्रेन टॉनिक प्रकाशन गृह, नाशिक

अनुक्रम

क्र.	आलेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
०१	समकालीन कविता में चित्रित स्त्री	डॉ. पी. व्ही. महालिंगे	९
०२	समकालीन हिंदी दलित कविता	डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय	११
०३	समकालीन हिंदी काव्य में नारी विमर्श	डॉ. कल्पना गवली	१२
०४	स्त्री-विमर्श और समकालीन कविता	डॉ. कमलेश कुमारी	१४
०५	चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में स्त्री-विमर्श	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	१७
०६	दलित विमर्श के यथार्थ अभिव्यक्तिकार ओमप्रकाश वाल्मिकी	गौतम पाटणवाड़िया	१८
०७	अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श	प्रा. गणेश शेकोकार	२०
०८	हिन्दी उपन्यासो में दलित चेतना	प्रा.डॉ.आश्विनीकुमार चिचोंलीकर	२२
०९	हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श	डॉ.गजाला शेख	२४
१०	समकालीन हिंदी कथा साहित्य और स्त्री-विमर्श	डॉ. रामचंद्र साळुंके	२६
११	इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श	डॉ. निलकंठ गिरि	२७
१२	स्त्री विमर्श : परिभाषा एवं परिव्याप्ति	शिराज शेख	२८
१३	हिंदी साहित्य में दलित चेतना	सुनिता यादव	३०
१४	समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना	प्रा. संतोष पगार	३२
१५	ममता कालिया तथा सानिया के उपन्यास में चित्रित स्त्री-विमर्श	स्वप्निल बच्छाव	३३
१६	हिंदी दलित कविता में जाति व्यवस्था	प्रा. शांताराम वळवी	३५
१७	शंकरशेष के नाटकों में अभिव्यक्त सामाजिक संवेदना	प्रा.माधुरी प्रभुणे	३६
१८	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श : एक मूल्यांकन	डॉ. दस्तगीर देशमुख	३८
१९	प्रभा खेतान के 'पीली आँधी' उपन्यास में स्त्री-चित्रण	प्रा. समाधान गांगुर्डे	४०
२०	'जी, जैसी आपकी मर्जी' नाटक में स्त्री-विमर्श	डॉ. पठान रहीम खान	४२
२१	अनामिका के 'दस द्वार का पिंजरा' में स्त्री-विमर्श	मनिषा चिने	४३
२२	मालती जोशी के 'अग्निपथ' कहानी में स्त्री चेतना	प्रा. जयश्री पवार-पाचोरकर	४५
२३	प्रभा खेतान की कविताओं में स्त्री-विमर्श	तृप्ती मेनन	४६
२४	'चाँद के आँसू' उपन्यास में नारी-विमर्श	डॉ. सन्मुख मुच्छटे	४८
२५	समकालीन हिंदी आत्मकथाओं में दलित विमर्श	डॉ. बी. टी. शेणकर	५०
२६	समकालीन साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. आर. जे. बहोत	५२
२७	समकालीन हिंदी कहानियों में दलित विमर्श	प्रतिभा उरसल	५३
२८	सुशीला कपूर की एकांकीयों में स्त्री- विमर्श	कल्पना शेजवळ	५५
२९	जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' में दलित चेतना	संतोष रोडे	५७
३०	समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री-विमर्श	प्रा.सुरेश मुंढे, प्रा.दत्तात्रय येडले	५८
३१	नारी विमर्श की सशक्त काव्यकृति: द्रौपदी क्यों बँटी तुम	प्रा. व्ही. जी. राठोड	५९
३२	कहानी साहित्य में महिला कहानीकारों का स्त्री-विमर्श	प्रा. मीनल बर्वे	६१
३३	हिंदी साहित्य और स्त्री-विमर्श	प्रा. संजय महेर	६२
३४	समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में नारी जीवन	प्रा नानासाहेब जावळे	६३
३५	समकालीन हिंदी कहानियों में दलित-विमर्श	प्रा.रवींद्र ठाकरे	६५
३६	भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानि अज़ीज़न	डॉ. संतोष मस्के	६६
३७	महिला नाटककारों की रचनाओं में स्त्री-विमर्श	शेख रुबीना	६८

ISBN 978-81-923650-7-7

क्र.	आलेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
३८	चित्रा मुद्गल की नारी-चेतना	प्रियंका	६९
३९	दलित विमर्श: 'अल्मा कबुतरी' उपन्यास के विशेष संदर्भ में	डॉ. प्रविण तुपे	७१
४०	दलित समाज के दर्द का दस्तावेज है - 'अपने-अपने पिंजरे'	डॉ. एम. एल. चव्हाण	७३
४१	समकालीन हिंदी आत्मकथाओं में दलित विमर्श	रेशमा खान	७४
४२	'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में चित्रीत स्त्री-विमर्श	डॉ.संजय जाधव	७६
४३	कात्यायनी के काव्य में स्त्री- विमर्श	शेख शिलीमन महेबूब	७७
४४	रुपसिंह चंदेल के 'रमला बहु' में नारी विमर्श	प्रा. अनिता राजबंशी	७८
४५	समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री-विमर्श	डॉ. सुषमा कोंडे	८०
४६	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श	प्रा. सुचिता गायकवाड	८१
४७	समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में चित्रित नारी	लक्ष्मी मनशेट्टी	८२
४८	स्त्री विमर्श : स्वरूप और परिव्याप्ति	ज्योति संसारे	८४
४९	हिन्दी सिनेमा में स्त्री, दलित-विमर्श	प्रा. सुनंदा वाघ	८५
५०	स्त्री-विमर्श और समकालीन हिन्दी उपन्यास	शोभना भालेराव-आहेर	८७
५१	समकालीन कविता में स्त्री-विमर्श	वंदना भालेराव-शिंदे	८८
५२	समकालीन महिला लेखन में नारी अस्तित्व	सरवदे संगिता	९०
५३	समकालीन साहित्य में स्त्री विमर्श	जयभीम वाघमारे	९२
५४	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श	डॉ.भारती धोंगडे	९४
५५	मृदुला गर्ग के उपन्यास साहित्य में महिला सशक्तिकरण	सुनिता पठारे	९५
५६	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श	पंडित नितिन	९६
५७	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श	प्रा.संध्या खंडागले	९८
५८	भूमंडलीकरण एवं स्त्री विमर्श	संतोष कारंडे	९९
५९	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. शरद कोलते	१०१
६०	संजीव ठाकूर के 'धार' उपन्यास में दलित चेतना	प्रज्ञा थोरात-पवार	१०२
६१	दलित समकालीन व्यवस्था के संदर्भ में	नागनाथ भेंडे	१०४
६२	भूमंडलीकरण एवं स्त्री-विमर्श	अशोक राऊतराय	१०५
६३	उदय प्रकाश कृत 'मोहनदास' कहानी में दलित-विमर्श	शरद शिरोळे	१०६
६४	वर्तमान हिंदी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श	वंदना काटे	१०७
६५	अलका सरावगी के 'शेष कादंबरी' में : स्त्री-विमर्श	सरला तुपे	१०९
६६	ग्रामीण जीवन में जातियता : मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के संदर्भ में	सविता नागरे	११०
६७	मन्नु भंडारी की 'अकेली' कहानी में स्त्री-विमर्श	दिपाली तांबे	११२
६८	शिवानी के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श	किरण शिंदे	११३
६९	समकालीन आत्मकथाओं में नारी-विमर्श	प्रा.अनिता कुंभार्डे	११५
७०	मुक्ति पर्व में दलित चेतना	बबन साळवे	११६
७१	हिंदी नारी विमर्श : दशा एवं दिशा	पिनल पढियार	११७
७२	नारी विमर्श : अनारो पर एक नज़र	पुरोहित पूर्वी	११९
७३	शैलेश माटियानी रचित 'अर्धांगिनी' कहानी में निरूपित स्त्री-विमर्श	प्रा. उत्तम येवले	१२०
७४	डॉ. शिवप्रसाद सिंह के साहित्य में नारी जीवन	डॉ. प्रतिज्ञा पतकी	१२२
७५	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ.सैय्यद मंजूर	१२३

ISBN 978-81-923650-7-7

वह लोग विरोध दर्शाते है पर रमा अपनी स्त्री काया इनसभी के बीच कर्तव्य के रुप में उपस्थित करके कँधा छोटा होने से दो ईंट कांधा देती है अनामिका जीने दोनों प्रमुख पात्र इतने प्रभावपूर्ण जताएँ है कि वह कभी झूकते नहीं हमेशा सन्मान के पात्र होते है।

वेद में मुक्ति के सूत्र है-

"स्त्रिया और शुद्र वे नही पढ़ सकते
इसका सीधा निष्कर्ष क्या ?
कि स्त्रियों और शुद्रों की मुक्ति असम्भव है।"४

धर्मशास्त्र पढ़ते समय हिंदुत्व की अगाधता जरा ज्यादा ही है। वेंदो में भी स्त्रीओं के मुक्ति के सुत्र दिये हैं। पर धर्मशास्त्र सिर्फ इतना ही कहता है स्त्रियाँ और नीची जाति के लोग हर तरह से अधम है और उनकी मुक्ति का मार्ग बस एक हि है शुद्र उनके स्वामीयों की सेवा जुता खाकर करे उनके कहे जीना उनके कहे मरना वैसी ही हालत औरतों की पति के साथ सती नहीं होती तो पूरी जिंदगी समाज की आँच पर उसे सुलगाने का इन्तजाम समाज करता है। अगर किसी स्त्री पर अत्याचार होता है तो वह पतित होकर भी उसे चोटी-बोटी काटकर कुत्तों के सामने शहर या सरहद से बाहर डालने की सला मनुजी लिखते है देते है जबरदस्ती की सजा पाकर भी पूरी जिन्दगी सजा की हकदार वही औरत बनती है यह कैसा इनसाफ है।

निष्कर्ष-

समकालीन महिला साहित्यकारों द्वारा जो विविध विधाओं में जो साहित्य प्रस्तुत हुआ वह अत्यंत आदर्शोन्मुखी यर्थाथवादी है। आनामिका जी पौराणिक पात्रों का सहारा लेकर इनकी आत्मीय कथा के जरिए भारतीय समाज का एक ऐसा परिदृश्य बनाया है जिसमें परंपरा और परिस्थिती आधुनिकता के उन्मोचक प्रभावों से परम्परा और पुर्णसंस्कार करने की प्रक्रिया चलती दिखाई है। रमाबाई, ताराबाई ढेलाबाई, फैनीपावर्स और डॉ आनंदी जोशी कितना सारा प्रतिकार पाकर भी पिछे नहीं हटती और विकास करती है, आत्मनिर्भर, स्वावलंभी होती है। इसी प्रकार के अनुभव बोध से लेखिका आनामिका है जीवन में सफल हूअी है यही स्त्री मुक्ति का सच्चा मार्ग है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१. आनामिका -दस द्वारे का पींजरा,
२. आनामिका -स्वाधीनता का स्त्री पक्ष,
३. डॉ गणेश कदम-स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रुप-
४. सं. प्रविण तुपे- इक्कीसवीं सदी के साहित्य में स्त्री विमर्श -

(शोधार्थी - अध्यापिका, हिंदी विभाग, कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), महाराष्ट्र)

---

22 मालती जोशी के 'अग्निपथ' कहानी में स्त्री चेतना

प्रा. जयश्री पवार-पाचोरकर

स्त्री चेतना स्वरुप :

साहित्य समाज का कभी-कभी दर्पण है। साहित्यने ही स्त्री को 'अबला' से 'सबला' बनाया है। परिवर्तन के कारण नारी का भी परिवर्तीत रुप समाज के अनेक क्षेत्र में उभरा है। नारी को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते देखते है। उसके एक साथ अनेक रुप है। अनेक समाज सुधारको ने नारी जागरण की कोशिश की है। जिसका परिणाम ये है की आज की नारी अपने विचार स्वतंत्र रुप से प्रकट करने लगी है। स्त्रीयों की समस्याओं को सामने रखकर हिंदी साहित्य में लिखा जाने लगा है। सदियों से अन्याय - अत्याचार सहने वाली नारी रुढी परंपरा को तोडते हुऐ दिख रही है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी चेतना पर काफी मात्रा में लेखन हुआ है। जिसमें प्रभा खेतान, ममता कालीया, मृदूला गर्ग, मन्त्रैयी पुष्पा, महरुन्निसा परवेझ, नासिरा शर्मा, मालती जोशी, सूर्यबाला आदि ने अपने साहित्य में स्त्री की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। इन्होंने वर्ग संघर्ष, दाम्पत्य संबंध के विविध आयामों को व्यक्त किया है।

मालती जी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित है :

'समर्पिता', 'पाषाण युग', 'परिणय', 'मध्यांतर', कहानी संग्रह 'राग-विराग' आदि।

अग्निपथ में स्त्री-चेतना : मालती जी के इन्ही कृतियों में से अग्निपथ ली गयी है। जिसमें चंदा नामक युवती की कथा प्रस्तुत कि है, जो अपने पति के दुर्व्यवहार, सांस की कटुक्तियों और दुर्भाग्य के क्रुर खिलवाड की शिकार बनी है। लेकीन चंदा जो युवती है वह

ISBN 978-81-923650-7-7

हार नहीं मानती और परिस्थितीयों से लड़ने के लिए तैयार रहती है। जब चंदा के पति की नौकरी चली जाती है तो घरवालों का उसके साथ बर्ताव बदल जाता है, और चंदा अपने बेटों को लेकर मायके चली जाती है, वहाँ चंदा अपने पैरों पर खडी होती है। अपने माँ - बाप से अलग रहती है। वह स्वाभीमानी लडकी है। अपने शराबी पती का ॲक्सिडेंट होता है और घरवाले उसें चंदा के पास छोड देते है। फिर भी वह अपनी हिम्मत नही हारती अपनी पति की सेवा करते-करते नौकरी भी करती है। अपने बेटों को अच्छी शिक्षा भी देती है। यहाँ मालती जी ने स्त्री के प्रति, घरवालों के दुर्व्यवहार का पर्दाफाश किया है।

भले ही स्त्री अन्याय को सहती है किंतु पति के पक्ष में निरंतर आगे रहती है, वह पति की ही भलाई चाहती है। जैसे कथा में स्त्री पात्र चंदा सहेली से कहती है कि, ''जिसका पति निठल्ला बैठा हो उसके लिए कही भी कुछ ठिक नही होता शालु। यही घर था जहाँ सब लोग मुझे हाथों हाथ लेते थे। आज मेरी स्थिती नोकरानी से भी बदतर हो गई है। इनकी नोकरी जाते ही सब के चेहरे बदल गए है।'' - १

आधुनिक युग में भी स्त्रियों की स्थिती में कोई सुधार नही लगता था की स्त्रियाऐं विकास करेंगी। आज भी स्त्री लक्ष्मी गृहिणी होकर भी आर्थिक भिखारी है, दुर्गा काली अष्टभूजा है, तो वह अबला कही जाती है। चंदा के पति को अच्छे कंपनी में नोकरी होती है तो घरवालें उसे बहुत लाड और प्यार से रखते है लेकिन पति की नौकरी चली जाती है तो वही घरवाले उसके साथ बेरहमी से पेश आते है। चंदा अपनी गुलामी वाली छवि सती - साध्वी या पति परमेश्वर को छोडकर अपना स्वतंत्र वजुद बनाना चाहती है। आधुनिकता और बौध्दिकता के कारण वह अपने निज स्वरुप और अपनी भावनाओं एवं इच्छाओं के नाते सचेत हुई है। भारतीय कुटुंबव्यवस्था एक स्त्री पर आधारीत है। चंदा की सांस है जो उसे अपने शब्दों से दुखी करती है।

''तुम्हारी सहेली को तो घडीभर उसके पास बैठने की फुर्सत नही है। पर मैंने तो नौ महिने इसे पेट में रखा है। इसे लावारीस कैसे छोड दूँ।'' - २

चंदा की सास है जो उसे हर वक्त ताने मारती है। हम अक्सर समाज में देखते है की पुरुष ही स्त्रीयों पर राज करते है। लेकीन ये अर्ध सत्य है। एक स्त्री ही दूसरी स्त्री को प्रताडीत करती है और एक औरत ही दूसरी औरत की दुश्मन होती है। लेकीन इस कहानी में चंदा ही सब कुछ सहती और शांत मन से अपने मुकाम तक पहुँचती है।

अत: स्पष्ट है कि मालती जी ने आधुनिक पारिवारिक स्त्री को अनेक समस्याओं से ग्रस्त बताने की कोशिश की है जिस में स्त्री ही दुसरी स्त्री के लिए समास्याऐ निर्माण करती है। तब भी वह स्त्री अपने लक्ष्य से हटती नहीं 'अग्निपथ' यही है।

निष्कर्ष :

कहा जा सकता है की 'अग्निपथ' कहानी स्त्री अस्मिता की तलाश करने वाली उत्पीडित एवं शोषित स्त्री की मुक व्यथा, वेदनाओं को वाणी देनेवाली तथा स्त्री को प्राचीन रुढ़ियों से मुक्ति का प्रयास करने वाली एक सफल कहानी है। आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत है। चंदा का चारित्र आधुनिक नारी को उजागर करता है। अग्निपथ कहानी में मालती जी ने नारी के मानसिक तथा शारिरीक शोषण को उजागर किया है बल्कि उसके खिलाफ लड़ने की, प्रतिकार करने की तथा अपने अस्तित्व की तलाश करने की ताकद प्रदान की है। स्त्री की चेतना की दृष्टी से यह अत्यंत सफल कहानी कही जा सकती है।

संदर्भ :

१. अग्निपथ, मालती जोशी, पृष्ठ क्र. १२६
२. अग्निपथ, मालती जोशी, पृष्ठ क्र. १२८

---

23 प्रभा खेतान की कविताओं में स्त्री-विमर्श

तृप्ती मेनन

किसी भी कार्य में प्रेरणा एक उत्प्रेरक का काम करती है । रासायनिक अभिक्रिया में भाग न लेते हुए भी उसकी गति को बढाने वाले पदार्थ को 'उत्प्रेरक ' कहते हैं । ऐसे ही, बाह्या उद्दीपक अगर प्रेरणा देने का कार्य करे तो मन के अंदर छुपे ज्ञान का और भावनाओं का भंडार खुल जाता है ।

प्रभा ने भी प्रेरणा ग्रहण कर साहित्य - रचना आरंभ की । प्रभा को प्रकृति ने प्रेरित किया, उनके शिक्षकों ने, उनके अपनों ने तो कभी विपरित परिस्थितियों ने । कभी - कभी उन्होंने स्वयं प्रेरणा से भी लिखना शुरु किया ।

आत्मप्रेरणा को जब बाह्या प्रेरणा का जोड मिला, तब प्रभा द्वारा उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हुआ । इन्हीं प्रेरणाओं के चलते प्रभा ने अपना जीवन पूर्ण जिंदादिली से और संपूर्ण नारी बनकर जिया ।

अपरिचित उजाले

प्रभा के टूटते - जुडते भावों को पूर्णाभिव्यक्ति देता हुआ उनका यह प्रथम काव्य संग्रह सन् १९८१ में प्रकाशित हुआ । मूल भाव प्रेम

ISBN 978-81-923650-7-7